देश विदेश की लोक कथाऐं — एक कहानी कई रंग–**13** ः

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियॉ

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Rumplestiltuskin Jaisi Kahaniyan (Like Rumplestiltuskin Stories)
Cover Page picture : Rumplestiltuskin
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियॉ 5
1 रम्पिलस्टिल्टस्किन 7
2 और सात 15
3 आलसी लड़की और उसकी चाचियॉ 29

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियॉ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियॉ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हम दस पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"। "एक कहानी कई रंग–1" में "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियॉ थीं।[1]

इसकी दूसरी पुस्तक में "टौम थम्ब" जैसी कहानियॉ दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाऐं हैं।[2]

इस सीरीज़ की तीसरी पुस्तक "छह हंस" जैसी कुछ कहानियों का संग्रह है जिसकी कहानियों की हीरोइन एक छोटी लड़की, साधारणतया सबसे छोटी बहिन, होती है जो अपने दो या चार या सात भाइयों को पक्षी या जानवर बन जाने के शाप से छुटकारा दिलाती है। ये सब कहानियॉ बहिन भाई के प्यार की कहानियॉ हैं।[3]

इस सीरीज़ की चौथी पुस्तक कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह है जो "तीन सन्तरे" कहानी जैसी हैं।[4]

इसी सीरीज़ की पॉचवी पुस्तक में "सफेद राजकुमारी और सात बौने"[5] वाली कहानी जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी हैं। यह कहानी यूरोप के देशों की एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी है।

इस सीरीज़ की छठी पुस्तक में "सोती हुई सुन्दरी..." जैसी कहानियॉ हैं।[6]

इस सीरीज़ की सातवीं पुस्तक में "सूअर राजा"[7] जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी हैं।

इस सीरीज़ की आठवीं पुस्तक में "बूट पहने हुए बिल्ला"[8] जैसी कुछ लोक कथाऐं दी गयी हैं।

इस सीरीज़ की नवीं पुस्तक में ""हैन्सैल और ग्रेटैल" जैसी कहानियॉ दी गयी हैं।[9]

---

[1] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"
[2] "One Story Many Colors-2" – like "Tom Thumb"
[3] "One Story Many Colors-3" – like "Six Swans"
[4] "One Story Many Colors-4" – like "Three Oranges"
[5] "One Story Many Colors-5" – like" Snow White and the Seven Dwarves"
[6] "One Story Many Colors-6" – like "Sleeping Beauty"
[7] "One Story Many Colors-7" – like "The Pig King" (in 3 parts)
[8] "One Story Many Colors-8" – like "Puss in Boots"
[9] "One Story Many Colors-9" – like "Hansel and Gratel"

इस सीरीज़ की दसवीं पुस्तक में "रैड राइडिंग हुड"[10] जैसी कुछ कहानियॉ दी गयी थीं।

इस सीरीज़ की ग्यारहवीं और बारहवीं पुस्तक में "सिन्डरैला जैसी कहानियॉ"[11] दी गयी थीं।

अब प्रस्तुत है इस सीरीज़ की यह तेरहवीं पुस्तक "रम्पिलस्टिलटस्किन जैसी कहानियॉ"[12]। इस पुस्तक में रम्पिलस्टिलटस्किन जैसी कहानियॉ दी गयीं है। रम्पिलस्टिलटस्किन रूस की एक बहुत ही मशहूर और लोकप्रिय लोक कथा है। पर तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा कि वैसी कथा केवल वहीं नहीं पायी जाती कई और जगहों पर भी कही सुनी जाती है। इस पुस्तक में हमने तुम्हारे लिये वैसी ही कुछ कथाऐं इकट्ठी कर के यहॉ रखी हैं। तो लो पढ़ो रम्पिलस्टिलटस्किन जैसी कुछ कहानियॉ...

[10] "One Story Many Colors-10" – Like "Red Riding Hood"

[11] "One Story Many Colors-11 and 12" – Like "Cinderella"

[12] "One Story Many Colors-13" – Like "Rumplestiltuskin"

1 रम्पिलस्टिल्टस्किन[13]

एक बार की बात है कि रूस के किसी हिस्से में एक गरीब आदमी रहता था जो लोगों का आटा पीस कर अपना और अपनी सुन्दर एकलौती लड़की का पेट भरता था।

एक दिन उस राज्य के राजा ने उसे बुला भेजा। जब वह गरीब आदमी राजा के दरबार में आया तो वह डर के मारे थर थर कॉप रहा था। बजाय चुप रहने के घबराहट में उसके मुँह से निकला — "मेरे एक लड़की है जो भूसे को सोने के तारों में कात सकती है।"

"अच्छा? अगर तुम जैसा कह रहे हो वह सच है तो तुम्हारी लड़की तो बड़ी ही होशियार और चतुर है। तुम उसे कल हमारे दरबार में ले कर आओ हम भी उसे देखना चाहेंगे।" राजा ने कहा।

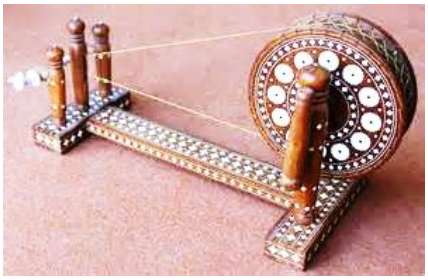

अगले दिन वह आदमी अपनी लड़की के साथ राजा के दरबार में हाजिर हुआ।

राजा उस लड़की को एक कमरे में ले गया जो भूसे से भरा हुआ था। उस कमरे में भूसे के अलावा बैठने के लिये एक चौकी, भूसा कातने के लिये एक चरखा और धागा लपेटने के लिये कुछ लकड़ी की रीलें रखीं थीं।

[13] Rumpelstiltuskin – a folktale from Russia, Asia.

राजा ने उस लड़की से कहा — "अब तुम अपना काम शुरू कर दो। अगर कल सुबह तक तुमने इस भूसे को सोने में नहीं बदला तो तुमको जान से हाथ धोने पड़ेंगें।" ऐसा कह कर राजा ने कमरे का ताला लगा दिया और चला गया।

वह लड़की चौकी पर बैठ गयी और उस भूसे को देखने लगी। वह उसे सोने में कैसे काते, वह नहीं जानती थी। सुबह का खयाल आते ही वह और भी अधिक डर गयी। उसे और तो कुछ नहीं सूझा बस वह अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा कर रोने लगी।

इतने में एक आश्चर्यजनक घटना घटी। अचानक ही बन्द कमरे का दरवाजा खुला और एक अजीब सी बनावट का छोटा सा आदमी उस कमरे में आया।

ऐसा आदमी उसने अपने ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था। उस आदमी ने आते ही कहा — "नमस्ते, तुम इतनी देर से क्यों रो रही हो? तुम्हें क्या दुख है?"

लड़की ने कहा — "क्या बताऊँ मुझे क्या दुख है। मुझे यह सारा भूसा सोने के तारों में कातना है और मुझे यह काम आता नहीं है।"

उस आदमी ने कहा — "अगर मैं तुम्हारा यह काम कर दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की बोली — "मेरे गले में जो यह माला पड़ी है यह मैं तुम्हें दे दूँगी।" उस आदमी ने वह माला ले ली और चरखे के सामने बैठ गया।

घर्र घर्र घर्र, चरखे के तीन बार घुमाने में ही एक रील सोने के तार से भर गयी। घर्र घर्र घर्र, और चरखे के तीन बार दोबारा घुमाने में ही दूसरी रील भी भर गयी।

रात भर वह आदमी इसी तरह से घर्र घर्र करता रहा और सुबह होने से पहले सारा भूसा उन रीलों पर सोने के तारों के रूप में लिपट चुका था। इस तरह सारा भूसा कात कर सुबह होने से पहले ही वह आदमी वहॉ से गायब हो गया।

सुबह को जब राजा आया तो वह इतना सारा सोना देख कर बजाय खुश होने के आश्चर्यचकित ज़्यादा हुआ। लेकिन वह इतने सोने से ही सन्तुष्ट नहीं था। सोने की झलक ने उसको और ज़्यादा लालची बना दिया था।

अब वह उस लड़की को एक दूसरे कमरे में ले गया जो पहले कमरे से भी बड़ा था और भूसे से भरा हुआ था। राजा ने उस लड़की से फिर वही कहा — "अगर कल सुबह तक तुमने इस भूसे को सोने में नहीं बदला तो तुमको जान से हाथ धोने पड़ेंगे।"

एक बार फिर वह लड़की उस भूसे से भरे कमरे में अकेली रह गयी। वह फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

पल भर में ही दरवाजा खुला और वही अजीब सा छोटा आदमी फिर अन्दर आया। उसने फिर पूछा — "अगर मैं तुम्हारे इस भूसे को सोने में कात दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की ने कहा — "अब मेरे पास यह अँगूठी है। तुम यह ले लेना।"

उस आदमी ने वह अँगूठी उसके हाथ से उतार ली और चरखे के सामने बैठ गया। घर्र घर्र घर्र, रात भर में उसने वह सारा भूसा कात कर सोने के तारों में बदल दिया और पहले की तरह सुबह होने से पहले ही गायब हो गया।

सुबह होते ही जब राजा आया तो वह उस सोने को देख कर बहुत खुश हुआ परन्तु अभी भी वह उतने सोने से सन्तुष्ट नहीं था।

वह उस लड़की को एक तीसरे कमरे में ले गया जो पहले दो कमरों से कहीं ज़्यादा बड़ा था और पूरे का पूरा भूसे से भरा हुआ था। इस बार उसने उस लड़की से कहा — "इस भूसे को अगर तुम सुबह तक सोने में बदल दो तो तुम मेरी रानी बन जाओगी।"

जब वह लड़की कमरे में अकेली रह गयी तो वह फिर बड़े ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। एक बार फिर वह छोटा आदमी फिर अन्दर आया और बोला — "अबकी बार तुम मुझे क्या दोगी अगर मैं तुम्हारा यह सारा भूसा सोने में कात दूँ?"

लड़की सिसकियॉ भरते हुए बोली — "अब तो मेरे पास तुम्हें देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

"अच्छा तो वायदा करो कि जब तुम रानी बन जाओगी तो अपना पहला बच्चा मुझे दे दोगी।"

"न तो मैं रानी बनूँगी न मेरे बच्चा होगा" यही सोच कर उसने उस आदमी से वायदा कर लिया कि वह रानी बनने के बाद अपना पहला बच्चा उसको दे देगी।

हर बार की तरह इस बार भी उस छोटे आदमी ने सारा भूसा फिर से सोने के तारों में कात दिया और सुबह होने से पहले ही चला गया।

जब राजा सुबह आया तो इतने सारे सोने को देख कर फूला न समाया। उसने सोचा कि लड़की सुन्दर है और उसने उसे धन भी बहुत दिया है सो उसने अपना वायदा निभाते हुए उससे शादी कर ली।

अब वह लड़की रानी बन गयी थी सो वह बहुत खुश थी और उस आदमी के बारे में सब कुछ भूल चुकी थी जिसने उसे सोना कात कर रानी बनाया था। एक साल बाद रानी के एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया। रानी और राजा फूले न समाये।

कुछ दिनों बाद वह अजीब आदमी अचानक ही रानी के कमरे में आया और बोला — "अपना वायदा पूरा करो और यह बच्चा मुझे दे दो।" रानी ने डर के मारे अपने बच्चे को अपनी छाती से चिपटा लिया।

रानी ने अपने बच्चे के बदले में उसे राज्य का सारा खजाना देने को कहा परन्तु उस आदमी ने साफ मना कर दिया और बोला — "मुझे तो खजाने के बदले में आदमी का बच्चा ज़्यादा पसन्द है।"

इस बात को सुन कर रानी बहुत रोयी बहुत चिल्लायी। उसका रोना चिल्लाना सुन कर उस आदमी को उस लड़की पर दया आ गयी।

उसने कहा — "ठीक है, मैं तुमको तीन दिन का समय देता हूँ, अगर तुमने मेरा नाम बता दिया तो यह बच्चा तुम्हारे ही पास रहेगा नहीं तो फिर इसे मैं ले जाऊँगा।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

उस रात रानी उन सब नामों को याद करती रही जो उसने कभी सुने थे। सुबह रानी ने एक आदमी बुलवाया और उससे देश के सभी लड़कों के नाम इकट्ठे करने को कहा।

जब वह छोटा आदमी अगले दिन आया तो उस लड़की ने नामों की एक लम्बी लिस्ट पढ़ दी पर उस आदमी का नाम उस लिस्ट में कहीं नहीं था।

अगले दिन फिर रानी ने उस आदमी को दूसरे देश में लड़कों के नाम मालूम करने भेजा। वह शाम तक फिर एक लम्बी लिस्ट ले कर आ गया।

शाम को जब वह छोटा आदमी आया तो रानी ने वे सब नाम उसको बताये जो कि उसकी लिस्ट में थे कि उस लिस्ट में उसका

नाम था या नहीं पर उस लिस्ट में भी उसका नाम नहीं था। रानी बहुत निराश हुई।

तीसरा दिन आखिरी दिन था। अगर आज रानी उस छोटे आदमी का नाम मालूम नहीं कर पायी तो वह छोटा आदमी उसके बच्चे को ले जायेगा। दिन भर रानी बहुत परेशान रही और अपने भेजे आदमी के वापस आने का बड़ी बेसब्री से इन्तजार करती रही।

उस दिन रानी का आदमी बहुत देर से लौटा और बोला — "आज मुझे कोई और नया नाम तो मालूम नहीं पड़ा रानी जी परन्तु जब मैं जंगल के किनारे एक ऊँचे पहाड़ से आ रहा था तो वहॉ मैंने एक घर देखा।

उस घर के सामने आग जल रही थी और उस आग के चारों तरफ एक अजीब सा छोटा सा आदमी नाच रहा था और गा रहा था — "आज मैं रोटी बना रहा हूँ। कल मैं रानी का बच्चा ले लूँगा। मेरा नाम वह कभी नहीं जान पायेगी इसलिये वह शर्त जीत भी नहीं पायेगी क्योंकि मेरा नाम रम्पिलस्टिल्टस्किन[14] है।"

रानी बहुत खुश हुई। जब वह छोटा आदमी आया तो उसने ऐसा बहाना किया जैसे वह उसका नाम जानती ही न हो। कई नाम लेने के बाद उसने कहा रम्पिलस्टिल्टस्किन।

[14] Rumpelstiltuskin

अपना नाम सुन कर वह आदमी बहुत गुस्सा हुआ और गुस्से में भर कर उसने अपना पैर फर्श पर दे मारा। इससे उसका पैर फर्श में धॅस गया।

इस पर वह और भी अधिक गुस्सा हुआ और किसी तरह अपना पैर फर्श से निकाल कर वहॉ से भागता नजर आया और फिर उसको कभी किसी ने नहीं देखा।

इसके बाद रानी अपने बच्चे के साथ निडर हो कर रही।

2 और सात[15]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी कहानियों के संग्रह की यह कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस लोक कथा में रम्पिलस्टिल्टस्किन का काम तीन बुढ़ियें करती हैं।

एक बार एक स्त्री थी जिसके एक बेटी थी। उसकी वह बेटी बहुत बड़ी और मोटी थी। जब उसकी मॉ उसके लिये मेज पर सूप लाती थी तो वह उसका पहला कटोरा पीती, फिर दूसरा, फिर तीसरा और फिर भी वह मॉगती ही रहती।

उसकी मॉ भी उसका कटोरा भरती ही रहती और गिनती रहती – "यह तीसरा", "यह चौथा"। जब वह लड़की सूप का सातवॉ कटोरा मॉगती तो उसकी मॉ बजाय उसका कटोरा भरने के उसके खाली कटोरे को उसके सिर पर मारती, चिल्लाती और कहती "और यह सात"।

एक बार एक बहुत ही अच्छे कपड़े पहने एक नौजवान उधर से गुजर रहा था कि उसने उस लड़की की मॉ को खिड़की से देखा कि वह सूप का कटोरा उस लड़की के सिर पर उलटा करके मार रही थी और उससे कह रही थी "और यह सात"।

[15] And Seven (Story No 5) – a folktale from Riviera Ligure di Ponente, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956. Translated by George Martin in 1980.

उस नौजवान को उस मोटी लड़की से प्यार हो गया। वह अन्दर चला गया और उसने पूछा — "सात क्या मॉ जी?"

अपनी बेटी की इतनी भूख से शरमिन्दा मॉ बोली — "सात ऊन कातने की तकली[16] बेटा। यह मेरी बेटी है जो ऊन कातने के पीछे इतनी पागल है कि उसने आज सुबह से भेड़ के ऊपर के बालों से सात तकली ऊन कात ली हैं।

क्या तुम सोच सकते हो कि उसने इस सुबह से सात तकली ऊन कात दी है और अभी और भी कातना चाहती है। उसी को रोकने के लिये मुझे उसे मारना पड़ा।"

वह नौजवान बोला — "अगर यह इतनी ही मेहनत करने वाली लड़की है तो आप इसे मुझे दे दें। मैं कोशिश करूँगा कि अगर आप सच बोल रही हैं तो मैं इससे शादी कर लूँ।"

मॉ ने अपनी उस बेटी को उस नौजवान को दे दिया और वह नौजवान उसको अपने घर ले गया। घर ले जा कर उसने उसको एक कमरे में बन्द कर दिया।

उस कमरे में बहुत सारी ऊन पड़ी थी कातने के लिये। उसको वहॉ ले जा कर वह नौजवान उससे बोला — "मैं समुद्री जहाज का कप्तान हूँ और अभी मैं एक समुद्री यात्रा पर जा रहा हूँ। अगर तुम

[16] Translated for the word "Spindle" – a round rod on a spinning wheel by which the thread is twisted and at the same time it is wounded upon. "Takalee" is for small work, while "Takuaa" is fixed in a Charakhaa. It is bigger in size and can contain much longer thread – see its picture above.

यह सारी ऊन मेरे वापस आने तक कात दोगी तो मैं अपनी यात्रा पर से आ कर तुमसे शादी कर लूँगा।"

इस कमरे में बहुत सुन्दर सुन्दर कपड़े और जवाहरात भी रखे थे क्योंकि वह कप्तान बहुत अमीर था। उसने उससे यह भी कहा — "जब तुम मेरी पत्नी बन जाओगी तब ये सारी चीज़ें तुम्हारी हो जायेंगी।"

यह कह कर वह उसको उस ऊन के साथ वहीं छोड़ कर अपनी यात्रा पर चला गया।

अब क्या था। अब तो वह लड़की थी और वह कमरा था। वह रोज नयी नयी पोशाकें पहनती नये नये जवाहरात पहनती। उसके दिन तो बस ऐसे ही गुजरने लगे। वह उन कपड़ों और गहनों को पहन कर अपने को शीशे में देखती और अपनी तारीफ करती।

बाकी समय वह यह सोचने में गुजारती कि वह क्या खायेगी और फिर घर के नौकर उसके लिये वही बनाते जो वह उनसे बनाने के लिये कहती।

अभी तक उसने उस ऊन को हाथ तक नहीं लगाया था जो उसको कातनी थी और अब कप्तान के आने में केवल एक दिन ही बाकी रह गया था। लड़की ने उस कप्तान से शादी की सारी उम्मीदें छोड़ दीं और रो पड़ी।

वह अभी रो ही रही थी कि खिड़की से चिथड़ों का एक थैला उसके पैरों के पास आ कर गिर पड़ा।

उसने उस थैले की तरफ देखा तो वह कोई चिथड़ों का थैला नहीं था बल्कि वह तो एक बुढ़िया थी जिसकी लम्बी लम्बी पलकें थीं। उसने लड़की से कहा — "डरो मत। मैं तुम्हारी सहायता करने आयी हूँ। मैं यह ऊन कातती हूँ और तुम इस ऊन की लच्छी बनाती जाओ।"

बच्चो, तुमने कहीं भी कोई भी इतनी तेज़ ऊन कातता नहीं देखा होगा जितनी तेज़ वह बुढ़िया ऊन कात रही थी। पन्द्रह मिनट के अन्दर अन्दर उसने वह सारी ऊन कात दी।

वह जितना ज़्यादा ऊन कातती गयी उसकी पलकें उतनी ही ज़्यादा लम्बी होती गयीं। पहले वे उसकी नाक से लम्बी हुईं, फिर उसकी ठोड़ी से लम्बी हुईं और फिर वे एक फुट लम्बी हो गयीं। फिर भी वह लम्बी होती ही जा रही थीं।

जब उसका काम खत्म हो गया तो लड़की ने पूछा — "मैम, मैं इसके बदले में आपको क्या दूँ?"

वह बुढ़िया बोली — "तुम्हें मुझे इसके बदले में कुछ देने की जरूरत नहीं है। बस जब तुम्हारी शादी की दावत हो तब मुझे उस दावत में बुला लेना।"

"पर मैं आपको बुलाऊँगी कैसे?"

बुढ़िया बोली — "बस तुम कोलम्बिया[17] बोल देना और मैं आ जाऊँगी। पर भगवान तुम्हारी सहायता करें अगर तुम मेरा नाम भूल

[17] Columbia – the name of the first old woman

गयीं तो इसका मतलब यह होगा कि जैसे मैंने कभी तुम्हारी सहायता की ही नहीं थी और तुम्हारा यह सब काम बेकार हो जायेगा।"

अगले दिन कप्तान जब घर वापस आया तो उसने देखा कि उसकी तो सारी ऊन कती पड़ी है। कती हुई ऊन देखते ही वह तो बहुत खुश हो गया और उसके मुॅह से निकला "वाह, बहुत बढ़िया। मुझे लगता है कि तुम ही वह लड़की हो जिसको मैं अपनी शादी के लिये ढूॅढ रहा था।

लो ये कपड़े और जवाहरात लो। ये मैंने तुम्हारे लिये ही खरीदे थे। पर अभी मुझे एक और समुद्री यात्रा पर जाना है। तब तक तुम एक इम्तिहान और दे दो।

यह उस ऊन से दोगुनी ऊन है जो मैंने तुमको पहले दी थी। अगर जब तक मैं अपनी यात्रा से वापस आऊॅ तब तक तुम इसको कात दो तो मैं तुमसे वहॉ से आ कर शादी कर लूॅगा।" इतना कह कर वह नौजवान वहॉ से फिर चला गया।

उसके जाते ही जैसे उस लड़की ने पहले किया था वैसे ही वह अबकी बार भी करती रही। कप्तान के वापस आने तक वह कपड़ों और गहनों को पहन पहन कर देखती रही और अच्छे अच्छे खाने खाती रही जब तक कि कप्तान के आने का आखिरी दिन नहीं आ गया। और वह सारी ऊन कातने के लिये वहीं पड़ी रही।

जब कप्तान के आने का आखिरी दिन आया तो वह फिर रोने बैठ गयी। तभी कमरे की चिमनी के रास्ते से एक पोटली आ गिरी और उसके पैरों तक लुढ़कती चली आयी।

पहले की तरह से उस पोटली में से भी एक बुढ़िया निकल आयी। इस बुढ़िया के होठ नीचे तक लटक रहे थे।

इस बुढ़िया ने भी इस लड़की से कहा कि वह उसकी सहायता करने के लिये वहॉ आयी थी। उसने इससे पहले वाली बुढ़िया से भी ज़्यादा मेहनत और तेज़ी से काम किया।

जितना ज़्यादा वह ऊन कातती जाती थी उसके होठ उतने ही ज़्यादा नीचे को लटकते जाते थे। इस बुढ़िया ने वह सारी ऊन आधा घंटे में कात कर रख दी।

जब इस लड़की ने उस बुढ़िया से पूछा कि वह उसको इसके बदले में क्या दे तो इसने भी यही कहा कि उसको इसके बदले में कुछ देने की जरूरत नहीं है। बस जब उसकी शादी कप्तान से हो तब वह उसको अपनी शादी की दावत में बुला ले।

लड़की ने पूछा कि वह उसको कैसे बुलाये।

तो उस बुढ़िया ने भी वही जवाब दिया — "बस तुम मुझे कोलम्बरा[18] कह कर पुकार लेना मैं आ जाऊॅगी। पर मेरा नाम मत भूल जाना क्योंकि अगर तुम मेरा नाम भूल गयीं तो मेरा यह सब

[18] Columbara – the name of the second old woman

किया धरा बेकार हो जायेगा। और फिर तुमको इसका फल भुगतना पड़ेगा।" यह कह कर वह वहॉ से चली गयी।

अगले दिन कप्तान अपनी यात्रा से वापस आ गया। उस सारी ऊन को कता हुआ देख कर वह तो आश्चर्य में पड़ गया पर ऊन तो कत चुकी थी सो इसमें अब शक की तो कहीं कोई गुंजायश ही नहीं थी।

पर फिर भी उससे रहा नहीं गया तो उसने उससे पूछ ही लिया — "यह सब ऊन तुमने काती है?"

"हॉ मैंने अभी अभी अपना काम खत्म किया है।"

"तुम ये कपड़े और जवाहरात लो। मैंने ये भी तुम्हारे लिये ही लिये थे। अब अगर तुम यह तीसरा ढेर भी मेरे वापस आने तक कात दो तो मैं तुमसे वायदा करता हूॅ कि अबकी बार मैं तुमसे शादी जरूर कर लूॅगा। यह ढेर उन दोनों ढेरों से कहीं ज़्यादा बड़ा है।"

इतना कह कर वह नौजवान अपनी तीसरी समुद्री यात्रा पर चला गया। इस लड़की ने इस बार भी वही किया जो पहली दो बार किया था। उसने अपना सारा समय नये नये कपड़े और गहने पहनने में और अपने आप को शीशे में देखने में और अच्छा अच्छा खाना खाने में बिता दिया और वह ऊन वहॉ ऐसे ही पड़ी रही।

कप्तान के आने से पहले दिन वह फिर रोने बैठ गयी। तभी कमरे की छत की नाली के छेद से फिर से एक फटे कपड़ों की

पोटली उसके पैरों के पास आ गिरी और पहले की तरह से उस पोटली में से भी एक बुढ़िया निकल आयी।

इस बुढ़िया के आगे के दॉत बहुत आगे की तरफ निकले हुए थे। इस बुढ़िया ने भी आते ही ऊन कातनी शुरू कर दी। पर यह बुढ़िया तो उन दोनों बुढ़ियों से भी ज़्यादा तेज़ी से ऊन कात रही थी जो उससे पहले उसकी ऊन कात कर गयी थीं।

जितनी ज़्यादा ऊन वह कातती जाती थी उसके दॉत उतने ही और ज़्यादा आगे की तरफ निकलते जाते थे। उसने वह सारी ऊन बहुत जल्दी ही खत्म कर दी।

जब बुढ़िया का काम खत्म हो गया तो इस लड़की ने इस बुढ़िया से भी पूछा कि वह उसको इस काम के बदले में क्या दे।

इस बुढ़िया ने भी वही कहा जो पहली दो बुढ़ियों ने कहा था कि अभी उसको कुछ भी देने की जरूरत नहीं है। बस केवल जब उसकी शादी कप्तान से हो तो वह उसको अपनी शादी की दावत में बुला ले।

पूछने पर कि वह लड़की उस बुढ़िया को अपनी शादी की दावत में कैसे बुलाये वह बुढ़िया बोली "बस तुम मुझे कोलम्बन[19] कह कर बुला लेना मैं आ जाऊॅगी। पर अगर तुम मेरा नाम भूल जाओगी तो बस समझ लेना कि जैसे तुमने मुझे पहले कभी देखा ही

[19] Columban – the name of the third old woman.

नहीं था।" यह कह कर वह बुढ़िया वहॉ से तुरन्त ही गायब हो गयी।

अगले दिन कप्तान अपनी समुद्री यात्रा से लौट आया और इतनी सारी ऊन कती देख कर तो उसने आश्चर्य से अपने दॉतों तले उॅगली दबा ली। पर क्योंकि अब ऊन तो कती पड़ी थी इसलिये आज भी शक की कोई गुंजायश नहीं थी।

यह सब देख कर वह बोला — "अब हमारी तुम्हारी शादी होगी।" और उसने शादी की तैयारियॉ शुरू कर दीं। उसने अपनी शादी में शहर के सभी कुलीन लोगों को बुलाया था। शादी की तैयारियों में वह लड़की उन बुढ़ियों को बिल्कुल ही भूल गयी।

जिस दिन उसकी शादी होने वाली थी उस दिन सुबह उसको याद आया कि उसको तो उन तीनों बुढ़ियों को भी बुलाना था ज्न्हिोंने उसको ऊन कातने में सहायता की थी। पर जब वह उनके नाम याद करने लगी ता उनमें से तो उसको एक का भी नाम याद नहीं आया। वे उसके दिमाग से बिल्कुल ही निकल गये थे।

उसने अपने दिमाग पर बहुत ज़ोर डाला कि वे नाम उसको किसी तरह से याद आ जायें पर उसको तो उन तीनों में से एक का नाम भी याद नहीं आया।

वह हमेशा खुश रहने वाली लड़की दुख के सागर में डूब गयी। कप्तान ने यह भॉप लिया कि वह लड़की बहुत परेशान है तो उसने उससे पूछा — "क्या बात है तुम इतनी परेशान क्यों हो?"

पर वह उसको क्या बताती। जब कप्तान को उसके दुखी होने का कुछ पता न चल सका तो उसने सोचा कि शायद शादी का यह दिन ही ठीक नहीं है सो उसने अपनी शादी की तारीख उस दिन से बदल कर उसके अगले वाले दिन के लिये तय कर दी।

पर उसका अगला दिन तो और भी खराब था। और उसका अगला दिन, यानी शादी का दिन, कैसा था यह तो बताने की जरूरत ही नहीं है। कप्तान को अपनी शादी की तारीख फिर से बदलनी पड़ी।

पर जैसे जैसे दिन बीतते जाते थे वह लड़की और ज़्यादा दुखी और चुप सी होती जाती थी। उसके माथे पर सिकुड़नें पड़ी रहतीं जैसे वह कुछ सोच रही हो और उसको उसकी परेशानी का हल न मिल रहा हो।

कप्तान ने उसको हॅसाने की बहुत कोशिश की – उसको चुटकुले सुनाये, हॅसी की कहानियॉ सुनायीं पर उसकी कोई भी कोशिश उस लड़की को खुश न कर सकी।

अब क्योंकि वह उसको खुश नहीं कर सका तो एक दिन उसने शिकार पर जाने का प्रोग्राम बनाया। जब वह शिकार के लिये जंगल गया तो इत्तफाक से बीच जंगल में काफी ज़ोर का तूफान आ गया और वह उस तूफान में घिर गया। पास ही में उसको एक झोंपड़ी दिखायी दे गयी सो उस तूफान से बचने के लिये वह उस झोंपड़ी में चला गया।

वह वहॉ पर अँधेरे में खड़ा था कि उसने वहॉ कुछ आवाजें सुनी — "ओ कोलम्बीना, ओ कोलम्बरा, ओ कोलम्बन, मक्का का दलिया[20] बनाने के लिये बरतन आग पर रख दो। लगता है कि वह लड़की तो हमको अपनी शादी की दावत में बुलाने वाली नहीं है।"

यह सुन कर उसने पीछे मुड़ कर देखा तो वहॉ उसको तीन पतली दुबली बदसूरत बुढ़ियें[21] दिखायी दीं। उनमें से एक की पलकों के बाल जमीन तक गिरे हुए थे, तो दूसरी के होठ उसके पैरों तक आ रहे थे और तीसरी के ऊपर के दॉत इतने बड़े थे कि वे उसके घुटनों तक आ रहे थे।

अब उस कप्तान की कुछ कुछ समझ में आया कि उसकी होने वाली पत्नी दुखी क्यों थी। अब वह उसको ऐसा कुछ बता सकता था जिससे वह हॅस सके। और अगर वह इस बात पर भी न हॅस सकी तब फिर वह किसी बात पर भी नहीं हॅस सकेगी।

सो वह शिकार तो भूल गया और वहॉ से तुरन्त ही अपने घर की तरफ दौड़ चला। जा कर उसने तुरन्त उस लड़की को बुलाया और अपने पास बिठा कर कहा — "पता है आज क्या हुआ? बस तुम सुन लो जो मैं तुमको बताऊॅ। और देखो हॉ बीच में मत बोलना।

[20] Translated for the Italian dish "Polenta" – a kind of thick paste of yellow cornmeal.
[21] Translated for the word "Crone"

आज जब मैं जंगल गया तो वहॉ बहुत ज़ोर की बारिश आ गयी। और बारिश से बचने के लिये मैं एक झोंपड़ी में चला गया।

वहॉ मैंने तीन जादूगरनियॉ[22] देखीं जिनमें से एक की पलकों के बाल जमीन पर लटक रहे थे, तो दूसरी के होठ उसके पैरों तक लटके हुए थे और तीसरी के दॉत उसके घुटनों तक लम्बे थे। और वे एक दूसरे को कोलम्बिया, कोलम्बरा और कोलम्बीना कह कर पुकार रही थीं।"

यह सुन कर उस लड़की का चेहरा तो वाकई चमक गया और वह बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी।

जब उसकी हॅसी थोड़ी सी रुकी तो वह बोली — "शादी की दावत की तैयारी करो। पर तुम मेरे ऊपर एक मेहरबानी और कर दो। क्योंकि तुमने उन तीन जादूगरनियों के नामों से मुझे हॅसाया है मैं उनको भी अपनी शादी की दावत में बुलाना चाहती हूॅ।"

"यह भी कोई पूछने की बात है। तुम उनको जरूर बुलाओ।" और फिर उस लड़की ने उनको अपनी शादी की दावत में बुलाया।

शादी की दावत के दिन उन तीनों के लिये अलग से एक गोल मेज सजायी गयी। वह मेज इतनी छोटी थी कि उन तीनों की ऑखों की लम्बी पलकों के बाल, लटकते होठ और बड़े बड़े दॉत कहॉ तक जा रहे थे यह किसी को भी दिखायी नही दिये।

[22] Translated for the word "Witches"

जब खाना खत्म हो गया तो कैप्टेन ने कोलम्बीना से पूछा — "आपकी पलकों के बाल इतने लम्बे क्यों हैं?"

कोलम्बीना ने जवाब दिया — "बहुत ही बारीक धागा कातने की वजह से मेरी ऑखों पर बहुत ज़ोर पड़ता है इसी लिये वे इतने लम्बे हो गये हैं।"

फिर कैप्टेन ने कोलम्बरा से पूछा — "मैम, क्या मैं जान सकता हूँ कि आपके होठ इतने नीचे को लटके हुए क्यों हैं?"

कोलम्बरा बोली — "क्योंकि मैं जब धागा कातती हूँ तो अक्सर अपनी उँगली गीली करने के लिये अपने होठों पर हाथ फेरती रहती हूँ इसलिये वे लटकते जाते हैं।"

फिर कैप्टेन ने कोलम्बीना से पूछा — "और कोलम्बीना जी आप? आपके दाँत इतने लम्बे कैसे हो गये?"

कोलम्बीना बोली — "क्योंकि मुझे अक्सर धागे में पड़ी गाँठें अपने दाँतों से काटनी पड़ती हैं न, इसी लिये।"

"ओह अच्छा अच्छा।"

फिर वह अपनी पत्नी से बोला — "जाओ और एक धागा लपेटने वाली तकली ले कर आओ।"

जब वह तकली ले कर आयी तो उसने उसको वहीं आग में फेंक दिया और बोला — "अब से तुम कभी धागा नहीं कातोगी।"

इसके बाद वह मोटी लड़की खुशी खुशी कैप्टेन के साथ आराम से रही। उसको कातने के लिये फिर कभी धागा नहीं दिया गया।

3 आलसी लड़की और उसकी चाचियॉ[23]

रम्पिलस्टिल्टस्किन जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें रम्पिलस्टिल्टस्किन का काम तीन बुढ़ियें करती हैं।

एक समय की बात है कि एक गरीब विधवा अपनी एक सुन्दर सी बेटी के साथ रहती थी। उसकी बेटी थी तो दिन के उजाले जैसी सुन्दर पर वह आलसी बहुत थी जब कि वह स्त्री खुद बहुत ही मेहनती थी।

वह स्त्री हमेशा यही चाहती थी कि उसकी बेटी भी उसी की तरह से मेहनती बने परन्तु सब बेकार। उसके मुँह से तो शब्द भी इतनी मुश्किल से निकलते थे मानो उनको भी निकलने में आलस आ रहा हो।

एक दिन वह स्त्री अपनी बेटी को उसके आलसी होने पर डॉट रही थी कि उधर से एक राजकुमार अपने घोड़े पर सवार निकला। वह बोला — "लगता है मॉ जी कि आपके घर में कोई खराब बच्चा है जो जिसको आप इतना डॉट रहीं हैं नहीं तो इतनी सुन्दर लड़की को तो कोई इस तरह नहीं डॉट सकता।"

[23] A Lazy Girl and Her Aunts – a folktale from Ireland, Europe.

स्त्री बोली — "योर मैजेस्टी, बिल्कुल नहीं। मैं तो बल्कि इस लड़की को इतना ज़्यादा काम करने से मना करने की कोशिश कर रही थी।

आप शायद विश्वास नहीं करेंगे कि यह एक दिन में तीन पौंड तक रुई कात लेती है, अगले दिन उस सूत का कपड़ा बुन लेती है और तीसरे दिन उस कपड़े की कमीजें बना लेती है।"

यह सुन कर तो राजकुमार की ऑखें फटी की फटी रह गयीं। वह बोला — "अच्छा? तब तो यह लड़की मेरी मॉ को बहुत पसन्द आयेगी क्योंकि मेरी मॉ भी सूत बहुत जल्दी कातती हैं।

मॉ जी, आप ऐसा कीजिये कि अपनी बेटी को मेरे घोड़े पर मेरे पीछे बिठा दीजिये। मेरी मॉ इसको देख कर बहुत खुश होगी और हो सकता है कि एकाध हफ्ते में वह इससे मेरी शादी भी कर दे अगर आपकी बेटी राजी होगी तो।"

भेद खुलने का डर भी था और रानी बन जाने की खुशी भी, सो उन दोनों को यह समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें परन्तु फिर भी उस लड़की की मॉ ने अपनी बेटी को राजकुमार के घोड़े पर उसके पीछे बिठा दिया और राजकुमार उसको ले कर अपने घर चल दिया।

राजकुमार स्त्री को काफी धन दे कर उस लड़की को वहॉ ले गया।

लड़की के जाने के बाद उसकी मॉ बहुत परेशान हुई कि कहीं उसकी बेटी के साथ कुछ बुरा न हो जाये। राजकुमार ने रास्ते में उससे कई सवाल किये पर उनसे उसको उस लड़की के बारे में किसी खास बात का पता नहीं चल सका।

उधर रानी ने जब राजकुमार के पीछे एक देहाती लड़की को घोड़े पर बैठे देखा तो वह भी सकते में आ गयी लेकिन जब रानी ने उसका सुन्दर मुखड़ा देखा और उसके कामों के बारे में सुना तब उसे कुछ तसल्ली सी हुई।

इसी समय राजकुमार ने अपनी मॉ के कान में फुसफुसा दिया कि अगर वह लड़की राजी हो गयी तो वह उससे शादी भी कर सकता है।

शाम गुजर गयी और राजकुमार और वह लड़की जिसका नाम ऐन्टी[24] था आपस में एक दूसरे को चाहने लगे। परन्तु ऐन्टी कातना बुनना आदि कामों के बारे में तो सोच कर ही कॉप उठती थी।

रात को जब सोने का समय आया तो रानी उसको एक बहुत ही सुन्दर सजे हुए कमरे में सुलाने के लिये ले गयी। जब वह वहॉ से जाने लगी तो ऐन्टी से बोली — "बेटी, तुम इस रुई का सूत कातना। कल सुबह के बाद तुम इसे कभी भी शुरू कर सकती हो और यह सूत तुम मुझे परसों सुबह दे देना।"

[24] Anty – name of the girl

रानी तो यह कह कर चली गयी परन्तु ऐन्टी को रात भर नींद नहीं आयी। वह रात भर यही सोच सोच कर रोती रही कि उसने अपनी मॉ की सलाह मान कर यह सब काम क्यों नहीं सीखा।

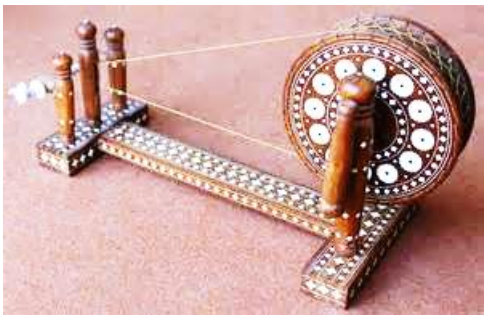

सुबह होने पर उसे एक कमरे में अकेले बिठा दिया गया और उसे एक बहुत ही बढ़िया किस्म का चरखा दे दिया गया।

कपास भी बहुत बढ़िया थी और चरखा भी परन्तु उसका धागा तो उससे बार बार टूट जाता था। कभी वह बहुत बारीक आता और कभी बहुत मोटा।

क्योंकि ऐन्टी ने तो सूत कभी काता ही नहीं था इसलिये उससे सूत कत ही नहीं रहा था। आखिरकार ऐन्टी ने तंग हो कर चरखा एक तरफ खिसका दिया और रोने लगी।

इतने में एक बड़े पैरों वाली छोटी बुढ़िया उसके सामने प्रगट हुई और बोली — "बेटी तुम्हें क्या दुख है?"

ऐन्टी बोली — "मेरे सामने यह इतनी सारी कपास पड़ी है इस सबका सूत कात कर मुझे कल सुबह तक देना है और मुझसे तो एक गज सूत भी नहीं काता जा रहा है।"

बुढ़िया बोली — "जब तुम्हारी शादी होगी तो क्या तुम मुझे बुलाओगी? अगर तुम ऐसा करो तो रात को जिस समय तुम सो रही होगी तुम्हारा यह सारा सूत कत जायेगा।"

लड़की बोली — "ठीक है। मैं तुमको अपनी शादी पर आने के लिये अभी से बुलावा देती हूॅ और वायदा करती हूॅ कि मैं तुमको ज़िन्दगी भर नहीं भूलूॅगी।"

बुढ़िया बोली — "ठीक है। तुम शाम तक अपने कमरे में ही रहो और शाम को जब रानी आये तो उससे कहना कि वह सुबह आ कर अपना सूत ले जा सकती है।"

ऐसा ही हुआ। अगले दिन सुबह रानी ने जब सूत देखा तो उसको देख कर बहुत खुश हुई और बोली — "कल तुम इस सूत का कपड़ा बुनना।"

बेचारी ऐन्टी इस बार पहले से भी ज़्यादा परेशान थी क्योंकि उसको तो कपड़ा बुनना भी नहीं आता था और वह राजकुमार को खोना नहीं चाहती थी।

यही सोचती वह परेशान सी बैठी थी कि एक भारी कमर वाली छोटी सी स्त्री उसके सामने प्रगट हुई और उससे पहले वाली बुढ़िया की तरह सौदा किया कि अगर वह उसको अपनी शादी में बुलायेगी तो रात भर में उसके सूत का कपड़ा बुन जायेगा।

ऐन्टी ने उसको विश्वास दिलाया कि वह उसको अपनी शादी में जरूर बुलायेगी। ऐन्टी ने हॉ कर दी तो वह उससे बोली कि वह आराम करे और रात भर में उसका कपड़ा बुन जायेगा। और अगले दिन सुबह जब वह लड़की उठी तो उसके लिये तो बहुत ही बढ़िया कपड़ा बुन कर तैयार था।

अगले दिन सुबह रानी ने जब कपड़ा देखा तो वह तो बहुत ही खुश हो गयी। वह बोली — "बेटी अब तुम आराम करो कल मुझे इस कपड़े की कमीजें बना कर और दिखा देना। तुम एक कमीज मेरे बेटे को भी दे सकती हो, बस फिर तुम्हारी और राजकुमार की शादी हो जायेगी।"

अगले दिन तो ऐन्टी बहुत ही परेशान थी। वह राजकुमार के जितनी पास थी उतनी ही दूर भी थी। पर आज वह उतना घबरा नहीं रही थी क्योंकि उसको विश्वास था कि आज भी उसकी परेशानी दूर करने के लिये कोई न कोई आ ही जायेगा। वह दोपहर तक शान्ति से इन्तजार करती रही।

दोपहर बाद उसके सामने एक बड़ी लाल नाक वाली स्त्री प्रगट हुई और उसने भी उससे पहली दोनों स्त्रियों की तरह ही सौदा कर के उसकी बारह कमीजें सिल कर मेज पर तह करके रख दीं। सुबह जब रानी आयी तो उन कमीजों को देख कर बहुत खुश हुई।

अब तो बस दोनों की शादी की ही बात होने लगी। शादी बहुत ही शानदार ढंग से हुई। ऐन्टी की मॉ भी आयी हुई थी। रानी के मुॅह पर केवल ऐन्टी की कमीजों की ही तारीफ थी।

तभी एक पहरेदार ने आ कर ऐन्टी से कहा "राजकुमारी जी, आपकी चाची अन्दर आना चाहती हैं।"

ऐन्टी तो यह सुन कर घबरा गयी कि यह उसकी कौन सी चाची आ गयी क्योंकि उसकी जानकारी में तो उसकी कोई चाची थी ही नहीं।

वह अपनी उन तीनों स्त्रियों को बिल्कुल ही भूल गयी थी जिन्होंने उसको रुई कातने में, फिर उस सूत का कपड़ा बुनने में और फिर उनकी कमीजें बनाने में सहायता की थी।

पर राजकुमार बोला — "उनको कहो कि ऐन्टी का कोई भी रिश्तेदार हम लोगों के पास कभी भी आ सकता है।"

सो बड़े पैरों वाली एक स्त्री आयी और राजकुमार के पास आ कर बैठ गयी। बड़ी रानी को यह अच्छा नहीं लगा पर उसका कुशल मंगल पूछने के बाद रानी ने पूछा — "मैम, क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपके ये पैर इतने बड़े क्यों हैं?"

वह स्त्री बोली — "मैं ज़िन्दगी भर चरखे पर खड़े हो कर सूत कातती रही हूँ न, इसी लिये।"

यह सुन कर राजकुमार ऐन्टी से बोला — "प्रिये, मैं तो अबसे तुम्हें कभी सूत कातने ही नहीं दूँगा।"

तभी एक पहरेदार ने फिर आ कर ऐन्टी से कहा "राजकुमारी जी, आपकी कोई दूसरी चाची अन्दर आना चाहती हैं।"

राजकुमार फिर बोला — "उनसे कहो कि ऐन्टी का कोई भी रिश्तेदार हम लोगों के पास कभी भी आ सकता है।"

फिर एक भारी कमर वाली स्त्री आयी और आ कर बैठ गयी। रानी ने उसकी भी कुशल मंगल पूछने के बाद उससे पूछा — "मैम, क्या मैं पूछ सकती हॅू कि आपकी कमर बीच में से इतनी चौड़ी क्यों है?"

वह स्त्री बोली — "रानी जी, मैं सारी ज़िन्दगी बैठ कर कपड़ा बुनती रही हॅू न, इसी लिये।"

यह सुन कर राजकुमार बोला — "प्रिये, मैं तो आज से तुमको कपड़ा बुनने के लिये कभी करघे पर बैठने ही नहीं दूॅगा।"

इसके बाद बड़ी लाल नाक वाली स्त्री आयी और वहॉ आ कर बैठ गयी। रानी ने उससे भी पूछा — "मैम, क्या मैं जान सकती हॅू कि आपकी नाक इतनी बड़ी और लाल क्यों है?"

वह स्त्री बोली — "क्योंकि मैं ज़िन्दगी भर सिर नीचा करके कपड़े सिलती रही हॅू इसलिये मेरे शरीर का सारा खून मेरी नाक की तरफ खिंच आया है, इसी लिये।"

राजकुमार फिर उस लड़की से बोला — "प्रिये, मैं तो तुम्हें कभी सुई ही नहीं पकड़ने दूॅगा।"

पर बच्चो, यह तो परियों की कहानी है। ऐसा भी कहीं होता है क्या? न तो आजकल राजकुमार हैं, न सहायता करने के लिये परियॉ हैं। सब कुछ अपने आप ही करना पड़ता है।

इसलिये इस कहानी से हमें यही सीखना चाहिये कि सबको अपनी ज़िन्दगी में बहुत काम करना चाहिये क्योंकि सभी लोग काम को प्यार करते हैं और हर जगह काम की ही तारीफ होती है।

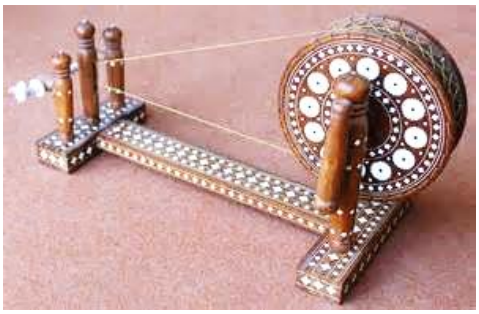

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories
2. Tom Thumb Like Stories
3. Six Swans Like Stories
4. Three Oranges Like Stories
5. Snow White and the Seven Dwarves Like Stories
6. Sleeping Beauty Like Stories
7. Pig King Like Stories
8. Puss in Boots Like Stories
9. Hansel and Gratel Like Stories
10. Red Riding Hood Like Stories
11. Cinderrella Like Stories
12. Cinderella in the World
13. Rumplestiltuskin Like Stories
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories
15. Crocodile and Monkey Like Stories

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**